
GILARDI

वे औरतें जो बिक की मालकिन हैं

मैं उस कैफ़े के दरवाज़े पर पहुँच चुका था जहाँ मुलाक़ात होनी थी।

मैं काँप रहा था, पर डर से नहीं। यह वह कँपकँपी थी जो एक सीधा-सा सवाल पूछती है: मैं ठीक कर रहा हूँ, या आख़िरकार मैंने ख़ुद को हद के पार धकेल दिया है?

एक और सवाल भी था: इस ऑपरेशन से मुझे क्या मिलेगा? वे कौन-से मक़सद हैं जो मैंने ख़ुद से इतनी गहराई में छिपा रखे हैं कि अब मैं भी उन्हें पहचान नहीं पाता?

मैंने सजावट में रखे एक गुलाब में हाथ डाला, तीन पंखुड़ियाँ तोड़ीं और उनसे अपना चेहरा महका लिया। आफ़्टरशेव सफ़र के बजट में शामिल नहीं था, पर मैं सिर्फ़ एक मर्द की गंध लिए नहीं पहुँचना चाहता था।

मैं लॉरियल के बेटे जॉर्ज के वतन में था, और उस कंपनी ने मुझे बहुत कुछ सिखाया था।

मैंने अपनी वेबसाइट का संगीत पृष्ठभूमि की धुन की तरह चला दिया। संयोग से जो गाना बजना शुरू हुआ, वह वही था जिसे मेरे पिता और दादा साथ मिलकर बजाया करते थे: मैंडोलिन और गिटार। वे मेरे साथ थे। हम तीनों साथ-साथ भीतर गए।

शनेल ने मुझे दूर से देखा और गर्मजोशी से गले लगाने चली आई, मानो हम बरसों बाद फिर मिल रहे पुराने दोस्त हों। लंबी। सुनहरे बाल। नीली आँखें। करीने से बँधे बाल। नेवी-ब्लू पोशाक में लिपटी, साँस रोक देने वाली मौजूदगी। एक पल को तो जी चाहा कि उससे पूछ ही लूँ कि गिरजाघर कहाँ मिलेगा, और फ़ौरन उससे शादी कर लूँ।

वह मुझे मेज़ की ओर ले गई। छह औरतें इंतज़ार कर रही थीं। बैठक शुरू होने को थी, और मैं पहले से जानता था कि टकराव कभी होगा ही नहीं। मुझमें एक जन्मजात खोट थी: मुझे जीतते हुए हारना आता था।

मैंने हर औरत को अपना परिचय दिया, यह पहचानने की कोशिश किए बिना कि मेज़ पर सबसे अहम कौन है। वह तो कोई दस सेकंड बाद अपने-आप पता चल गया।

पहली औरत ने अपना नाम और उपनाम बताया, और ठेठ जिलेट मैन के अंदाज़ में मैंने उसका हाथ चूमा। फिर मेज़ पर बैठी हर दूसरी औरत के साथ भी यही किया, हर एक को एक मुस्कान भेंट करते हुए, और साथ में एक: “आँशांते.” मेड इन कालाब्रिया।

उसके बाद ही मैंने अपना नाम बताया, इस बात में ज़रा भी शक किए बिना कि उनमें से हर एक पहले से जानती थी कि मैं कौन हूँ।

उन्होंने पूछा कि मैं क्या पीना चाहूँगा, नाश्ता करूँगा या नहीं, शायद कोई छोटी-सी पेस्ट्री। मैंने समझाया कि मेरे हमेशा वाले होटल का स्टाफ़ मुझे सुबह तब तक निकलने ही नहीं देता जब तक अपनी आँखों से मुझे एक ढंग का

नाश्ता करते न देख ले। सब की सब ठहाका मारकर हँस पड़ीं।

फिर उन्होंने पूछा कि क्या यह पेरिस की मेरी पहली यात्रा है। मैंने बताया कि बरसों पहले मैंने सीन के किनारों पर, नदी से लगे बग़ीचों में काम किया था, फूल चुनते और हर सुबह उन्हें ताज़ा-ताज़ा नोत्र-दाम गिरजाघर पहुँचाते हुए। यह मैंने इस इंतज़ार में किया था कि माता मरियम मुझ पर एक कृपा करें और उन छहों के साथ ठीक यही मुलाक़ात करवा दें। मुझे इस पर कभी शक नहीं हुआ। आख़िर, यह एक औरत का वादा था।

वे मुस्कुराईं। माहौल नरम पड़ गया। बातचीत में अपनापन उतर आया।

फिर उनमें से एक ने पूछा: “मिस्टर फ्रेगा, फ़्रांस में आपको सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?”

“यह भी कोई सवाल हुआ?” मैंने जवाब दिया। “जवाब तो ज़ाहिर है।”

बिक।

बातचीत ने फ़ौरन एक सुहाना मोड़ ले लिया।

थोड़ी देर बाद हमने तय किया कि बात दोपहर के खाने पर जारी रखेंगे, और शांज़-एलीज़े पर कोई सौ मीटर पैदल चले। पर पूरे रास्ते मेरी नज़र उन्हीं तीन या पाँच आदमियों पर पड़ती रही जो हमें दूर से देख रहे थे। मैंने उन्हें पहले ही पल से भाँप लिया था। और उन्होंने मुझे। वे सुरक्षा वाले थे। कभी बहुत पास नहीं। कभी बहुत दूर नहीं।

हम एक फ़्रांसीसी रेस्तराँ में दाख़िल हुए। वही ठेठ क़िस्म का फ़्रांसीसी रेस्तराँ जहाँ आप लगभग कुछ नहीं खाते और अच्छी-ख़ासी दौलत चुका आते हैं।

मैंने शनेल को बुलाया। वह फ़ौरन मेरी ओर चली आई।

“क्या हुआ?”

“हम जा रहे हैं।”

“जा रहे हैं?”

“हाँ। मैं आप सबको कहीं खिलाने ले जा रहा हूँ।”

पूरे एक मिनट तक वे जड़ खड़ी रहीं। मेहमान ही नाच की अगुवाई करे, यह देखने की उन्हें आदत नहीं थी। फिर भी मेरा प्रस्ताव इतना क़ायल करने वाला था कि वे सब पीछे हो लीं। जैसे मुर्ग़े के पीछे चलती मुर्ग़ियाँ। वैसे भी, हम मुर्ग़े के ही मुल्क में थे।

हम पहली ही पिज़्ज़ा और सैंडविच की दुकान पर पहुँचे जो हमें मिली। भीतर जाने से पहले मैं मालिक के पास गया।

“मुझे सात सैंडविच चाहिए, पाँच-पाँच यूरो की, पीने का सामान शामिल।”

“और पैसे मैं दूँगा।”

सौदा पक्का हो गया। और अच्छी छाप भी पड़ गई।

हम भीतर गए। वे बिलकुल हक्की-बक्की लग रही थीं, मानो उड़ने वाले घोड़ों के पंखों पर सवार हों, और ठीक-ठीक समझ नहीं पा रही थीं कि हो क्या रहा है।

वे जिलेट नैरेटिव के भीतर थीं। और उनमें से किसी को अभी इसकी ख़बर नहीं थी।

फर्दिनांदो